4

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023 के आलोक में कक्षा 3 की हिंदी पाठ्यपुस्तक 'वीणा' का विश्लेषणात्मक अध्ययन

नविंद्रा बाई*
विश्वास**

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (रा.शै.अ.प्र.प.) देश में विद्यालयी शिक्षा की गुणवत्ता के लिए सन 1961 से कार्यरत है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अस्तित्व में आने के बाद से शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार लाने के निरंतर प्रयास किए जा रहे हैं। रा.शै.अ.प्र.प. ने इसके लिए क्रमबद्ध रूप से अनेक कार्य किए हैं। इसी क्रम में रा.शै.अ.प्र.प. ने अप्रैल 2024 में कक्षा 3 की हिंदी की पाठ्यपुस्तक 'वीणा' का भी निर्माण किया है। यह पाठ्यपुस्तक राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 एवं विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (एन.सी.एफ.-एस.ई.) 2023 की संकल्पनाओं के अनुरूप तैयार की गई है। इसी आलोक में इस पाठ्यपुस्तक का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया है। विश्लेषण के लिए जिन मानदंडों को अपनाया गया, वे राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 एवं विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023 में वर्णित संकल्पनाओं के आधार पर तय किए गए हैं।

"अंक और अक्षर सीखना—
ये जीवित व्यक्ति की दो आँखें हैं।"

— तिरुवल्लुवर

हम भारतीयों को प्राचीनकाल से ही इस बात की स्पष्ट समझ थी कि शिक्षा में अंक और अक्षर सबसे मूल्यवान हैं, जिसकी पुष्टि प्राचीन तमिल कवि तिरुवल्लुवर की उपर्युक्त पंक्ति से होती है। इससे ज्ञात होता है कि भाषा और गणित को मानव की दो आँखों के रूप में देखा जा सकता है, जिनके माध्यम से मानव दुनिया को समझता है। इसलिए चिरकाल से ही भाषा और गणित पाठ्यक्रम के सबसे महत्वपूर्ण क्षेत्र हैं। वाचन एवं लेखन क्षमता तथा संख्याओं के

**सहायक आचार्य,* शिक्षा विभाग, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, मैसूरु 570 006
***सह-आचार्य,* शिक्षा विभाग, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, मैसूरु 570 006

साथ बुनियादी संक्रियाएँ करने की क्षमता, भविष्य की समस्त विद्यालयी शिक्षा और जीवन पर्यंत सीखने के लिए एक आवश्यक आधार और अपरिहार्य शर्त है (अनुच्छेद 2.1, एन.ई.पी. 2020)। भाषा सांस्कृतिक जागरूकता और अभिव्यक्ति का एक महत्वपूर्ण पहलू है, जिसे बच्चों में विकसित किए जाने वाली प्रमुख योग्यताओं में से एक माना जाता है (पृ.सं. 75, एन.सी.एफ.-एस.ई., 2023)। भाषा केवल सोचने का माध्यम नहीं है, बल्कि ज्ञान अर्जन, ज्ञान का हस्तांतरण एवं ज्ञान का परिमार्जन भी भाषा के द्वारा ही संभव हो पाता है। भाषाओं में दक्षता एक लोकतांत्रिक समाज के लिए आवश्यक है, जिसमें व्यक्ति उसके राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन में भाग लेते हैं और योगदान देते हैं (पृ.सं. 235, एन.सी.एफ.-एस.ई., 2023)।

विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (एन.सी.एफ.-एस.ई.) 2023 ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 द्वारा दी गई भाषा संबंधी अनुशंसाओं को क्रियान्वित करने के लिए कार्य योजना प्रस्तुत की है। इसी क्रम में विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (एन.सी.एफ.-एस.ई.) 2023 द्वारा प्रारंभिक स्तर के लिए भाषा के संदर्भ में निम्नलिखित पाठ्यचर्या के लक्ष्य निर्धारित किए गए हैं—

पाठ्यचर्या लक्ष्य 1— विचारों को सुसंगत रूप से समझने और संप्रेषित करने के लिए जटिल वाक्य संरचनाओं का उपयोग करते हुए मौखिक भाषा कौशल विकसित की जाती है।

पाठ्यचर्या लक्ष्य 2— परिचित और अपरिचित पाठ्यवस्तु (जैसे— गद्य और पद्य) के विभिन्न रूपों की बुनियादी समझ विकसित करके अर्थबोध सहित पढ़ने की क्षमता विकसित की जाती है।

पाठ्यचर्या लक्ष्य 3— अपनी समझ और अनुभवों को व्यक्त करने के लिए सरल और यौगिक वाक्य संरचनाओ को लिखने की क्षमता विकसित की जाती है।

पाठ्यचर्या लक्ष्य 4— विभिन्न स्रोतों के माध्यम से विभिन्न संदर्भों (घर और स्कूल के अनुभव) में व्यापक शब्द भंडार विकसित करते हैं।

पाठ्यचर्या लक्ष्य 5— पढ़ने में रुचि और प्राथमिकताओं को विकसित किया जाता है।

पाठ्यचर्या के लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (रा.शै.अ.प्र.प.) ने कक्षा तीन की हिंदी भाषा की पाठ्यपुस्तक 'वीणा' का निर्माण किया है। इस पाठ्यपुस्तक में कुल 18 पाठ दिए गए हैं। कक्षा एक एवं दो की भाँति ही कक्षा तीन में भी पाठ्यचर्या के उद्देश्यों की पूर्ति के लिए विषयवस्तु को पाँच मुख्य थीमों में बाँटा गया है। ये निम्नलिखित हैं—

थीम एक— हमारा पर्यावरण

1. सीखो (आनंदमयी कविता)
2. चींटी (आनंदमयी कविता)
3. कितने पैर? (संवाद)
4. बया हमारी चिड़िया रानी (आनंदमयी कविता)
5. आम का पेड़ (कहानी)

थीम दो— हमारे मित्र

6. बीरबल की खिचड़ी (कहानी)
7. मित्र को पत्र (पत्र-लेखन)
8. चतुर गीदड़ (एकांकी)
9. प्रकृति पर्व— फूलदेई (गद्य)

थीम तीन— आओ खेलें

10. रस्साकशी (खेल गीत)
11. एक जादुई पिटारा (आनंदमयी कविता)

थीम चार— अपना-अपना काम

12. अपना-अपना काम (कहानी)
13. पेड़ों की अम्मा 'थिमक्का (गद्य)
14. किसान की होशियारी (कहानी)

थीम पाँच— हमारा देश

15. भारत (आनंदमयी कविता)
16. चंद्रयान (संवाद)
17. बोलने वाली माँद (कहानी)
18. हम अनेक किंतु एक (आनंदमयी कविता)

अब प्रश्न यह है कि कक्षा तीन के स्तर पर राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 एवं विद्यालयी शिक्षा के लिए पाठ्यचर्या की रूपरेखा (एन.सी.एफ.-एस.ई.) 2023 ने जिन भाषायी लक्ष्यों को निर्धारित किया है; क्या राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (रा.शै.अ.प्र.प.) द्वारा तैयार की गई कक्षा तीन की हिंदी पाठ्यपुस्तक 'वीणा' उन्हें पूरा करने में सक्षम है? इस जिज्ञासा के साथ राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 एवं विद्यालयी शिक्षा के लिए पाठ्यचर्या की रूपरेखा (एन.सी.एफ.-एस.ई.) 2023 के आलोक में हिंदी की इस पाठ्यपुस्तक का विश्लेषण करने का प्रयास किया गया है। विश्लेषण के लिए निम्नलिखित मानदंडों को अपनाया गया है—

- पाठ्यपुस्तक का भौतिक पक्ष
- संवैधानिक, वैज्ञानिक, मानवीय मूल्य एवं आचार
- 21वीं सदी के कौशल
- सामाजिक-भावनात्मक, अधिगम कौशल एवं जीवन कौशल
- भारतीय ज्ञान प्रणाली— प्राचीन एवं शाश्वत
- भारतीय मौलिकता, भारतीय संस्कृति, बहु-भाषा एवं बहु-धार्मिक समाज
- उभरती हुई शिक्षण विधियाँ— अनुभवात्मक, कला-एकीकृत, खेल-एकीकृत, कहानी सुनना आदि
- बहु-अनुशासनात्मक एवं अंतःअनुशासनात्मक प्रकृति
- समसामयिक विषय
- संकल्पनात्मक समझ
- गतिविधियों की प्रासंगिकता एवं पर्याप्तता
- सीखने के संसाधन
- समग्र आकलन, 360 डिग्री बहुविध तरीके

पुस्तक का भौतिक पक्ष

आवरण पृष्ठ

पाठ्यपुस्तक का नाम 'वीणा' है, जिसे आवरण पृष्ठ पर दर्शाया गया है। इसमें एक बालिका को वीणा बजाते हुए दिखाया गया है। यहाँ इस शीर्षक की सार्थकता दो तरह से है— पहली लिंग समानता और दूसरी प्राचीन भारतीय संस्कृति की झलक। भारतीय संस्कृति

और हमारे पर्यावरण की पहचान के रूप में आवरण पृष्ठ पर गाय को भी चित्रित किया गया है। वहीं पुस्तक की थीम हमारे मित्र और आओ खेलें को दो बच्चों को हॉकी खेलते हुए दर्शाया गया है। इस चित्र के माध्यम से भारतीय खेल हॉकी भारतीयता के प्रति सजगता और लगाव को प्रस्तुत करने में सफल हुई है। आवरण पृष्ठ पर अपना-अपना काम कई तरीके से समझा जा सकता है; यथा मंगलयान के द्वारा विज्ञान के क्षेत्र में वैज्ञानिकों द्वारा किया गया काम और नृत्य करते हुए चित्र के माध्यम से काम के रूप में नृत्य के प्रति सम्मान को प्रतिबिंबित किया गया है। पुस्तक के आवरण चित्र पर हमारे देश की विविधता की झलक प्रस्तुत है। अंतिम परंतु अति महत्वपूर्ण थीम हमारा देश कई प्रकार से झलकती है। चाहे वह राष्ट्रीय खेल हॉकी खेलते हुए बच्चे हों, राष्ट्रीय अस्मिता को बढ़ाने वाला चंद्रयान हो अथवा देश की सांस्कृतिक पहचान के चिह्न के रूप में नृत्य, वीणा वादन और गाय का चित्र हो।

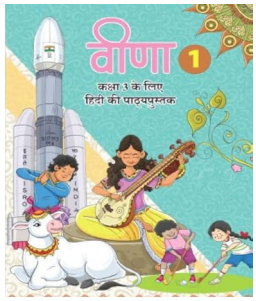

अनुक्रमणिका, अक्षरों का आकार, चित्रों की गुणवत्ता, चित्रण, रंग, भाषा आदि

पुस्तक के भीतर अनुक्रमणिका को एक सृजनात्मक शीर्षक कहाँ क्या है? के नाम से दिया गया है जो कि एक नई पहल है और अपने आप में प्रश्नवाचक वाक्य होते हुए भी पुस्तक की सामग्री के बारे में बताने वाले उत्तर के रूप में है। पाठों को थीम के अनुसार क्रम में लगाया गया है। साथ ही पाठों से संबंधित चित्रों को भी अनुक्रमणिका में दिखाया गया है जो इसे आकर्षक बनाता है।

इस प्रकार की व्यवस्था विद्यार्थियों को पाठों को पढ़ने के लिए पर्याप्त रूप से प्रेरित करने में सक्षम है। पुस्तक में छपे अक्षर पर्याप्त आकार के हैं, जो पढ़ने में सुलभ हैं। साथ ही उनको विभिन्न रंगों में प्रकाशित किया गया है, जो आंशिक रूप से दृष्टि-बाधित विद्यार्थियों को पढ़ने में सुविधाजनक प्रतीत होते हैं।

पुस्तक में दर्शाए गए दृष्टांत एवं उनसे जुड़े चित्रों की आभा देखते ही बनती है। जो चित्र दर्शाए गए हैं, वे उनसे जुड़ी विषयवस्तु को सार्थकता प्रदान कर रहे हैं। उदाहरणार्थ के तौर पर पाठ संख्या 02 चींटी में पृष्ठ संख्या 13 पर दर्शाए गए चित्र में हाथी और चींटी, पाठ संख्या 08 चतुर गीदड़ में पृष्ठ संख्या 64–66 पर दर्शाए गए मगरमच्छ, गीदड़ और कछुआ, पाठ संख्या 09 प्रकृति पर्व— फूलदेई में पृष्ठ संख्या 73–74 पर दर्शाए गए विभिन्न चित्र एवं पाठ संख्या 17 बोलने वाली माँद में पृष्ठ संख्या 138–140 पर दिखाए गए शेर और सियार। पुस्तक में दिए गए दृष्टांत विषयवस्तु

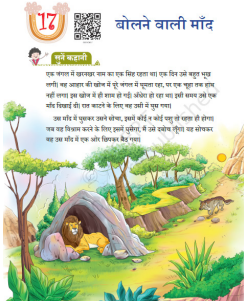

की बेहतर समझ को विकसित करने के लिए पूरक सामग्री का कार्य कर रहे हैं। पाठ संख्या 03 कितने पैर? में पृष्ठ संख्या 14–18 एवं पाठ संख्या 16 चंद्रयान (संवाद) में पृष्ठ संख्या 129–132, में इसके जीवंत उदाहरण हैं। पुस्तक में रंगों का संयोजन आकर्षक ढंग से किया गया है, जो कक्षा तीन के स्तर के विद्यार्थियों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करने में उतना ही सक्षम है जितना कोई सजीव वस्तु। पुस्तक में जीव-जंतुओं, व्यक्तियों, वस्तुओं और प्रकृति आदि को उनके वास्तविक रंगों में दर्शाया गया है, जिससे बच्चों तक प्रकृति की वास्तविक समझ बन सके। पाठ के अंदर आए गणित के अंकों को हिंदी में भी लिखा गया है, ताकि हिंदी के अंकों के प्रति विलुप्त होते ज्ञान को पुनर्जीवित किया जा सके। पुरातन गणितीय इकाई, जैसे— सौ मन और एक सेर आदि का प्रयोग भी पुस्तक में किया गया है। पुस्तक में क्षेत्रीय भाषा के शब्दों का भी यथोचित रूप से प्रयोग किया गया है, जैसे— अनाज की जगह नाज और सब्जी की जगह साग।

संवैधानिक वैज्ञानिक, मानवीय मूल्य एवं आचार

पुस्तक में पाठ संख्या 15 भारत में पृष्ठ संख्या 122–128 और पाठ संख्या 18 हम अनेक किंतु एक पृष्ठ में संख्या 147–155 के माध्यम से देश के प्रति सम्मान और जुड़ाव तथा अनेकता में एकता का मूल्य रोपित करने का प्रयास किया गया है। पाठ संख्या 16 चंद्रयान (संवाद) में पृष्ठ संख्या 129–137 में भारतीय बच्चों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित करने का प्रयास किया गया है। इसके साथ ही उनमें वैज्ञानिक मूल्य एवं आचार का विकास भी किया जा सकता है।

पाठ संख्या 01 सीखो में पृष्ठ संख्या 1–8, पाठ संख्या 02 चींटी में पृष्ठ संख्या 9–13, पाठ संख्या 04 बया हमारी चिड़िया रानी में पृष्ठ संख्या 24–32 एवं पाठ संख्या 06 बीरबल की खिचड़ी में पृष्ठ संख्या 46–55 में पाठ की विषयवस्तु के साथ-साथ अन्य गतिविधियों के माध्यम से मानवीय मूल्यों एवं आचार को बच्चों को सिखाने का बेहतर प्रयास किया गया है।

21वीं शताब्दी के कौशल

पुस्तक में पाठ संख्या 12 अपना-अपना काम में पृष्ठ संख्या 106 पर गतिविधि 'कल्पना कीजिए' में पूछा गया है कि यदि आप अपनी इच्छा से एक दिन के लिए कुछ भी बन सकते तो क्या बनते? यह बच्चों में कल्पनाशीलता और सृजनात्मकता को पोषित करने के लिए एक बेहतर गतिविधि है। इस पुस्तक में और भी इस प्रकार की गतिविधियाँ सम्मिलित की गई हैं।

पाठ संख्या 17 बोलने वाली माँद में पृष्ठ संख्या 141 पर सोचिए और लिखिए के अंतर्गत दिए गए एक प्रश्न, यदि आप सिंह के स्थान पर होते तो क्या करते? के माध्यम से निर्णय लेने की क्षमता, जो कि विश्लेषणात्मक चिंतन से जुड़ा कौशल हैं, का विकास किया जा सकता है। पुस्तक

में इस प्रकार की कई गतिविधियाँ दी गई हैं, जिनके माध्यम से विश्लेषणात्मक चिंतन का विकास किया जा सकता है।

पाठ संख्या 04 बया हमारी चिड़िया रानी में पृष्ठ संख्या 31 पर पूछा गया है कि बया और बच्ची के बीच क्या बातचीत रही होगी? इस प्रश्न के माध्यम से बच्चों में संप्रेषण कौशल को विकसित किया जा सकता है। इसके साथ-साथ ऐसी गतिविधियाँ पुस्तक में दी गई हैं जिनके माध्यम से संप्रेषण कौशल का विकास किया जा सकता है।

सामाजिक-भावनात्मक अधिगम कौशल एवं जीवन कौशल

पुस्तक में उपर्युक्त कौशलों को विकसित करने के लिए व्यापक स्तर पर विषयवस्तु एवं उनसे जुड़ी अनेक गतिविधियाँ सम्मिलित की गई हैं। उदाहरणार्थ पाठ संख्या 01, 06, 08, 14 एवं पाठ संख्या 17 में बहुत जगह बच्चों में इन कौशलों को विकसित करने के अवसर दिए गए हैं।

भारतीय ज्ञान प्रणालियाँ— प्राचीन एवं शाश्वत

पाठ संख्या 10 रस्साकशी में पृष्ठ संख्या 85 व 89 पर ऐसे पुरातन भारतीय खेलों की ओर ध्यान आकर्षित किया गया है, जो वर्तमान दौर में विलुप्त होते जा रहे हैं और हमारी प्राचीन खेल विरासत की पहचान हैं। इसके अतिरिक्त अन्य पाठों में भी भारत के पुरातन व्यंजन व पोशाक आदि के विषय में ध्यान आकर्षित किया गया है।

मौलिकता, भारतीय संस्कृति, बहुभाषी और बहु-धार्मिक समाज

पाठ संख्या 07 मित्र को पत्र, पाठ संख्या 09 प्रकृति पर्व— फूलदेई , पाठ संख्या 13 पेड़ों की अम्मा 'थिमक्का', पाठ संख्या 15 भारत एवं पाठ संख्या 18 हम अनेक किंतु एक के माध्यम से मौलिकता, संस्कृति और बहु-धार्मिक समाज के संदर्भ में विषयवस्तु को प्रस्तुत किया गया है। साथ ही अनेक गतिविधियाँ ऐसी हैं जो हमें इस ओर ले जाती हैं। वहीं कई पाठ ऐसे हैं, जिनके माध्यम से बहु-भाषिकता का पोषण किया जा सकता है। उदाहरणार्थ पाठ संख्या 09 प्रकृति पर्व— फूलदेई में हिंदी से इतर कुमाऊँनी भाषा के शब्दों का प्रयोग किया गया है एवं पाठ संख्या 13 पेड़ों की अम्मा 'थिमक्का' में कन्नड़ भाषा के शब्दों का प्रयोग किया गया है। इसके अलावा कई पाठों की गतिविधियों में बच्चों से उनकी मातृभाषा के शब्दों का प्रयोग करने का अवसर प्रदान किया गया है।

प्रासंगिक शिक्षण-विधियाँ— अनुभवात्मक, कला-एकीकृत, खेल-एकीकृत, कहानी सुनाना आदि

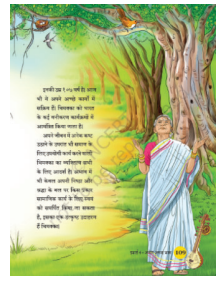

पुस्तक के लगभग सभी पाठों में अनुभवात्मक (शब्द निर्माण, वाक्य संरचना, स्वानुभवों का लेखन), कला-एकीकृत (चित्र बनाओ, रंग भरो, मुखौटा बनाओ) एवं खेल-एकीकृत (पहेली बूझो, भूल-भुलैया, शब्द पहेली) गतिविधियाँ दी गई हैं। वहीं भाषा शिक्षण के दौरान अनेक ऐसे अवसर उपस्थित हैं,

जिनको कहानी सुनाने के माध्यम से उपयोग में लाया जा सकता है।

बहु-अनुशासनात्मक और अंत:अनुशासनात्मक प्रकृति

पाठ संख्या 02 चींटी में पृष्ठ संख्या 11 पर एक प्रश्न भाषा की बात के अंतर्गत 'कविता में' कितनी बार चींटी शब्द आया है 'उन्हें गिनिए और उतनी चींटियाँ बनाकर पंक्ति को पूरा कीजिए'। इसमें गणित एवं कला दोनों का समावेशन किया गया है जो इसकी बहु-अनुशासनात्मकता का द्योतक है। इसके अतिरिक्त पाठ संख्या 03 कितने पैर? में पृष्ठ संख्या 22 पर पहेली से पहले के अंतर्गत तीन प्रश्न दिए गए हैं जो गणितीय कौशल से संबंधित है। इसी प्रकार पुस्तक में अनेक पाठ ऐसे हैं, जिनमें बहु-अनुशासनात्मक और अंत:अनुशासनात्मक प्रकृति विद्यमान है।

समसामयिक विषय

पुस्तक में लिंग समानता का पूरा-पूरा ध्यान रखा गया है। पुस्तक में एक ओर उत्तर भारत के पर्व का जिक्र किया गया है तो दूसरी ओर दक्षिण भारत से संबंधित पाठ भी है। पुस्तक में उत्तर-पूर्व का प्रतिनिधित्व भी दिखाई देता है। साथ ही पूरे भारत की प्राकृतिक और सांस्कृतिक धरोहर को इकाई पाँच के अंतर्गत 'हमारा देश' में प्रदर्शित किया गया है। इस प्रकार इस पुस्तक में समावेशी दर्शन को पूर्णत: समाविष्ट किया गया है।

संकल्पनात्मक समझ

इस पुस्तक में थीम के अनुसार विभिन्न पाठों को दिया गया है। थीम के अंतर्गत दिए गए पाठों के माध्यम से भाषायी कौशलों के साथ-साथ अन्य उद्देश्यों यथा— सामजिकता की भावना, सांस्कृतिक विरासत पर गर्व करना, पर्यावरण संरक्षण आदि को भी प्राप्त किया जा सकता है। वहीं व्याकरण के सूत्रों को सीखने के अवसर भी इस पाठ्यपुस्तक में उपस्थित हैं। उदाहरण के तौर पर विराम चिह्नों की जानकारी, लिंगभेद आदि की जानकारी पाठ्यपुस्तक में दी गई है।

गतिविधियों की प्रासंगिकता और पर्याप्तता

इस पुस्तक में प्रत्येक पाठ के बाद भाषा कौशलों से जुड़ी अनेक गतिविधियाँ दी गई हैं। ये कौशलों के विकास में तो सहायक हैं ही, साथ ही 21वीं सदी के कौशलों एवं विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए भी उपयुक्त हैं। इन विशेषताओं के साथ गतिविधियाँ प्रासंगिक प्रतीत होती हैं। इन गतिविधियों को पुस्तक में पर्याप्त स्थान दिया गया है।

सीखने के संसाधन

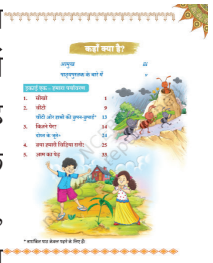

इस पुस्तक के पाठ संख्या 09 प्रकृति पर्व— फूलदेई में पृष्ठ संख्या 79 पर उत्तराखंड के त्योहार के माध्यम से कुछ पुष्पों की जानकारी दी गई है, साथ ही उनसे होने वाले लाभ भी बताए गए हैं। वहीं एक अन्य पाठ संख्या 18

हम अनेक किंतु एक में पृष्ठ संख्या 151–152 पर 'पढ़िए और जानिए' गतिविधि में विभिन्न क्षेत्रों के भोजन की अतिरिक्त जानकारी दी गई है। इसी चर्चा में अलग-अलग क्षेत्र में बोले जाने वाली भाषा और वेशभूषा की जानकारी भी दी गई है। पाठों में दिए गए विभिन्न दृष्टांत अधिगम के महत्वपूर्ण संसाधन के रूप में प्रस्तुत किए गए हैं।

समग्र आकलन, 360 डिग्री आकलन तथा बहुविध मोड़

इस पुस्तक में रूपात्मक एवं योगात्मक आकलन के अवसर प्रदान किए गए हैं। मौखिक परिचर्चा द्वारा, लिखित गतिविधियों तथा विभिन्न पहेलियों के माध्यम से, रचनात्मक लेखन से और कला व खेल एकीकरण से आकलन करने की संभावनाएँ उपस्थित हैं। चंद्रयान (संवाद) पाठ सहित अन्य पाठों में बहुविकल्पीय प्रश्न दिए गए हैं। कक्षा तीन के स्तर पर इस प्रकार के प्रश्नों से बच्चों का परिचय कराना एक बेहतर प्रयास है।

निष्कर्ष

पाठ्यपुस्तक में विभिन्न थीमों के माध्यम से भाषायी कौशलों के विकास के साथ-साथ, विद्यार्थियों में उसके आस-पास के वातावरण के प्रति सजगता, सामाजिक व्यवहार, शारीरिक स्वास्थ्य का महत्व, कर्तव्य-परायणता और देश के प्रति गौरव का अनुभव करने वाली भावनाओं का विकास करने के पर्याप्त अवसर उपस्थित हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में उर्दू भाषा संबंधी लक्ष्यों को विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023 ने रेखांकित

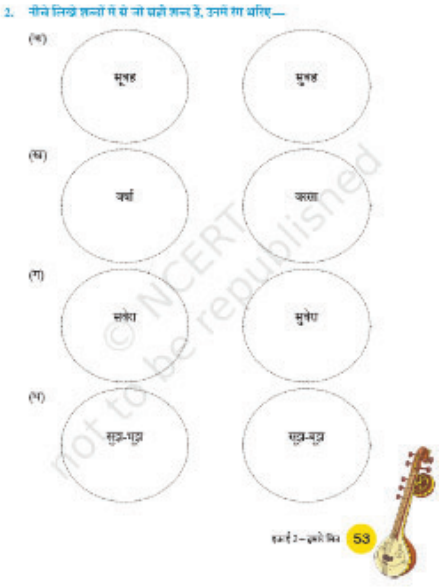

करते हुए भाषा की पाठ्यपुस्तक के लिए सुझाव दिए हैं। इसमें भाषा शिक्षण के लिए किस तरह की विषयवस्तु का चयन किस प्रकार से किया जाए, थीमों के चयन में कौन-कौन से मापदंड अपनाए जाएँ, नवाचारी शिक्षण उपागमों को किस तरह से अपनाया जाए तथा आकलन को सीखने के रूप में किस प्रकार से प्रयोग में लाया जाए, शामिल हैं। कक्षा तीन की हिंदी की पाठ्यपुस्तक 'वीणा' में उपर्युक्त को समुचित रूप से समाहित किया गया है। इस पाठ्यपुस्तक में कला एवं खेल एकीकृत गतिविधियों को लगभग प्रत्येक पाठ में सम्मिलित किया गया है, जो रचनात्मकता के साथ-साथ सूक्ष्मगतिकीय कौशलों का विकास करने में भी सहायक हैं। पाठों के बाद दी गई विभिन्न गतिविधियों यथा बातचीत के लिए, कविता की बात, पढ़िए और बताइए, कविता से आगे, भाषा की बात,

© NCERT not to be republished

बूझो तो जानें, आइए मिलकर गाएँ, पाठ के भीतर, सोचिए और लिखिए, पहेली से पहले, किसने क्या कहा, खेल-खेल में, कला की कलाकारी, खोजें-जानें, कहानी की बात और आइए कुछ बनाएँ आदि के माध्यम से विद्यार्थी के सर्वांगीण विकास के अवसर उपलब्ध हैं। शिक्षक के लिए बहुत ही स्पष्ट और संक्षिप्त रूप से शिक्षण-संकेत सम्मिलित किए गए हैं जो पाठयपुस्तक के विद्यार्थियों तक सही रूप में हस्तांतरित करने में सहायक हैं।

कक्षा तीन के लिए तैयार की गई हिंदी की पाठ्यपुस्तक 'वीणा' राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की अनुशंसाओं और विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (एन.सी.एफ-सी.ई.) 2023 का अक्षरशः अनुपालन करती है। यह पाठ्यपुस्तक विद्यार्थियों में रचनात्मकता, अवधारणात्मक समझ, तार्किक चिंतन, आधारभूत मूल्यों एवं प्रवृत्तियों के विकास पर समान रूप से बल देती है। इसके साथ-साथ समावेशन, बहु-भाषिकता, जेंडर (लिंग) समानता और सांस्कृतिक जुड़ाव के लिए आवश्यक विषयवस्तु को भी पाठ्यपुस्तक में सम्मिलित किया गया है। पाठ्यपुस्तक में सूचना एवं प्रौद्योगिकी का भी उचित प्रकार से संयोजन किया गया है। इसलिए राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद द्वारा निर्मित यह पाठ्यपुस्तक समकालीन दृष्टिकोण से प्रासंगिक प्रतीत होती है।

संदर्भ

रा.शै.अ.प्र.प. 2023. *विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023.* राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली.

———. 2024. *वीणा (कक्षा 3)*. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली.

शिक्षा मंत्रालय. 2020. *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020.* शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली.